स्त्रीप्रत्यय (लघुसिद्धान्त कौमुदी)

१. **स्त्रियाम् -४.१.३**

अधिकारो ऽयम्, समर्थानामिति यावत्॥

यह अधिकार सूत्र है। यहां से स्त्रियाम् का अधिकार "समर्थानां प्रथमाद्वा" सूत्र तक है।

२. अजाद्यतष्टाप् -४.१.४

अजादीनामकारान्तस्य च वाच्यं यत् स्त्रीत्वं तत्र द्योत्ये टाप् स्यात्, अजा, एडका, अश्वा, चटका, मूषिका, बाला, वत्सा, होडा, मन्दा, विलाता, इत्यादि॥ मेधा, गङ्गा, सर्वा॥

अजादि तथा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिंग में टाप्(आ) प्रत्यय होता है।

३. उगितश्च ४.१.६

उगिदन्तात्प्रातिपदिकात्स्त्रियां ङीप्स्यात्, भवती, भवन्ती, पचन्ती, दीव्यन्ती॥

उक् (उ ऋ लृ) इत् संज्ञक वाला कोई भी प्रत्यय यदि किसी शब्द के अन्त में है तो ऐसे शब्दों से स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय होता है। भा डवतु(अवत्)=भवत्+ङीप् = भवती इत्यादि , भू+शतृ+ङीप् =भवन्ती , पच्+शतृ+ङीप् =पचन्ती , इत्यादि।

४. टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः ४.१.१५

अनुपसर्जनं यट्टिदादि तदन्तं यददन्तं प्रातिपदिकं ततः स्त्रियां ङीप्स्यात्, कुरुचरी, नदट् नदी, देवट् देवी, सौपर्णेयी, ऐन्द्री, औत्सी, ऊरुद्वयसी, ऊरुदघ्नी, ऊरुमात्री, पञ्चतयी, आक्षिकी, लावणिकी, यादृशी, इत्वरी,

१.**टित्** – कुरुचर+ट(अ)=कुरुचर+ङीप् = कुरुचरी , नदट्/देवट्+ङीप्=नदी/देवी।

२.**ढ** – सुपर्णी+ढक्(एय)= सौपर्णेय+ङीप्(ई) = सौपर्णेयी

३. **अण्-** इन्द्र+अण्(अ)=ऐन्द्र+ङीप्= ऐन्द्री ,

४. **अञ्** – उत्स+अञ्(अ)=औत्स+ङीप् =औत्सी ,

५. **द्वयसच्** –ऊरु+द्वयसच् =ऊरुद्वयस+ङीप्= ऊरुद्वयसी ,

६. **दघ्नच्** – ऊरु+दघ्नच् = ऊरुदघ्न+ङीप्= ऊरुदघ्नी ,

७. **मात्रच्** – ऊरु+मात्रच् =ऊरुमात्र+ङीप्= ऊरुमात्री ,

८. **तयप्** – पञ्च+तयप् = पञ्चतय+ङीप् = पञ्चतयी ,

९. **ठक्** – अक्ष+ ठक्(इक) = आक्षिक+ङीप् = आक्षिकी ,

१०. **ठञ्** – लवण+ठञ्(इक) = लावणिक+ङीप्= लावणिकी ,

११. **कञ्** – यादृश्+कञ्(अ) = यादृश +ङीप् = यादृशी ,

१२. **क्वरप्** – इण्(इ) क्वरप्(वर) = इत्वर +ङीप् = इत्वरी ,

वार्तिक- (*नञ्स्नञीकक्ख्युंस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानम्*), स्त्रैणी, पौंस्नी, शाक्तीकी, याष्टीकी, आढ्यङ्करणी, तरुणी, तलुनी॥

नञ् , स्नञ् , ईकक् , ,ख्युन् प्रत्ययान्त शब्द तथा तरुण और तलुन शब्द से भी स्त्रीत्व विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है, **"स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात्"** स्त्री और पुंस् शब्दों से क्रमशः नञ् और स्नञ् प्रत्यय होते हैं , **"शक्तियष्ट्योरीकक्"** सूत्र से ईकक् प्रत्यय होता है तथा **"आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषु च्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः करणे ख्युन्"** सूत्र से ख्युन् प्रत्यय होता है।

स्त्री +नञ्(न)> स्त्रै + न> स्त्रै+ण=स्त्रैण+ङीप्= स्त्रैणी ,

पुंस् +स्नञ्(स्न) पौंस्न > पौंस्न + ङीप् = पौंस्नी ,

शक्ति+ईकक्(ईक) = शाक्तीक +ङीप् = शाक्तीकी ,

यष्टि+ईकक्(ईक) = याष्टीक + ङीप् = याष्टीकी ,

आढ्यक्+ख्युन्(यु=अन)= आढ्यङ्करण +ङीप्= आढ्यङ्करणी ,
तरुण + ङीप् = तरुणी ,
तलुन + ङीप् = तलुनी ,

५. यञश्च ४.१.१६

यञन्तात् स्त्रियां ङीप्स्यात्, अकारलोपे कृते –

यञ् प्रत्ययान्त शब्दों से भी स्त्रीत्व विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे –

गर्ग + यञ्(य)–	गर्गादिभ्यो यञ् ,
गार्ग + य –	तद्धितेष्वचामादेः ,
गार्ग् + य (गार्ग्य)-	यचि भम्, यस्येति च ,
गार्ग्य+ङीप्(ई) -	यञश्च
गार्ग्य् +ई	यचि भम्, यस्येति च ,

६. हलस्तद्धितस्य ६.१.१५०

हलः परस्य तद्धितयकारस्योपधाभूतस्य लोप ईति परे, गार्गी॥

व्यञ्जन वर्ण के बाद स्थित तद्धित के "य्" का लोप होता है यदि उसके बाद में "ई" हो तो , गार्ग्य् +ई > गार्ग्+ई = गार्गी ,

७. प्राचां ष्फ तद्धितः ४.१.१७

यञन्तात् ष्फो वा स्यात्स च तद्धितः॥

यञ् प्रत्ययान्त शब्दों से प्राचीन आचार्यों के मत में "ष्फ" तद्धित प्रत्यय भी होता है।

गर्ग + यञ् = गार्ग्य + ष्फ(फ=आयन) > गार्ग्यायन > **गार्ग्यायण ,**

८. षिद्गौरादिभ्यश्च ४.१.४१

षिद्भ्यो गौरादिभ्यश्च स्त्रियां **ङीष्** स्यात्, गार्ग्यायणी, नर्तकी, गौरी, अनुडुही, अनड्वाही, आकृतिगणोऽयम्।

षित् प्रत्ययान्त तथा गौरादि शब्दों से स्त्रीत्वविवक्षा में **"ङीष्"** प्रत्यय होता है,

गार्ग्यायण +ङीष्(ई) = गार्ग्यायणी ,
नृत् +ष्वुन्(वु= अक) > नर्त् +अक = नर्तक+ ङीष् = नर्तकी (शिल्पिनि ष्वुन्) ,
रज् + ष्वुन्(वु= अक) >रज् +अक = रजक+ ङीष् = रजकी (शिल्पिनि ष्वुन्) ,
खन् +ष्वुन्(वु= अक) >खन्+अक=खनक+ ङीष् = खनकी (शिल्पिनि ष्वुन्) ,
गौर/अनडुह/अनड्वाह+ङीष् = गौरी/ अनडुही/ अनड्वाही ,

९. वयसि प्रथमे ४.१.२०

प्रथमवयोवाचिनोऽदन्तात् स्त्रियां ङीप्स्यात् , कुमारी ,

आरम्भिक आयु वाचक ह्रस्व अकारान्त शब्द से स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय होता है।

कुमार +ङीप् = कुमारी , किशोर + ङीप् = किशोरी ,

१०. द्विगोः ४.१.४१

अदन्ताद् द्विगोर्ङीप्स्यात्, त्रिलोकी , अजादित्वात्त्रिफला, त्र्यनीका सेना॥

ह्रस्व अकारान्त द्विगु समास युक्त शब्द से स्त्रीत्व विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है। त्रिफला और त्र्यनीका शब्द अजादि शब्दों में है अतः द्विगु समास होने पर भी "टाप्" ही होगा ,

त्रिलोक + ङीप् = त्रिलोकी , पञ्चपूल+ङीप् = पञ्चपूली ,

११. वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः ४.१.३९
वर्णवाची योऽनुदात्तान्तस्तोपधस्तदन्तादनुपसर्जनात्प्रातिपदिकाद्वा ङीप् तकारस्य नकारादेशश्च, एनी, एता, रोहिणी, रोहिता॥
ऐसे वर्णवाची शब्द जिनका अन्तिम वर्ण अनुदात्त हो तथा जिनकी उपधा में "त्" हो तो ऐसे शब्दों से स्त्रीत्वविवक्षा में विकल्प से ङीप् प्रत्यय होता है तथा उपधा में स्थित "त्" के स्थान पर "न्" होता है।
एत + ङीप् > एन +ङीप् =एनी , विकल्प से एत+टाप् = एता ,
हरित+ङीप्>हरिन+ङीप्= हरिणी , विकल्प से हरित +टाप् = हरिता ,
इसी तरह रोहिणी/रोहिता, श्येनी/श्येता इत्यादि ,

१२. वोतो गुणवचनात् ४.१.४४
उदन्ताद् गुणवाचिनो वा ङीष् स्यात्, मृद्वी, मृदुः , पट्वी पटुः ,
ह्रस्व उकारान्त गुणवाची शब्द से स्त्रीत्व विवक्षा में विकल्प से **ङीष्** प्रत्यय होता है।
मृदु + ङीष् (ई) = मृद्वी , विकल्प से धेनु शब्द की तरह ही मृदुः ,
पटु + ङीष् (ई) = पट्वी , विकल्प से पटुः ,

१३. बह्वादिभ्यश्च ४.१.४५
एभ्यो वा ङीष् स्यात्, बह्वी, बहुः,
बहु आदि शब्दों से भी स्त्रीत्वविवक्षा में विकल्प से **ङीष्** प्रत्यय होता है।
बहु +ङीष् = बह्वी , विकल्प से बहुः ,

वार्तिक - (*कृदिकारादक्तिनः*) रात्री, रात्रिः,
ऐसे इकारान्त कृदन्त शब्द जिसमें "क्तिन्" प्रत्यय नहीं है उनसे विकल्प से **ङीष्** प्रत्यय होता है। रात्रि +ङीष्(ई) = रात्री , विकल्प से रात्रिः , अङ्गुलिः/अङ्गुली, धूलिः/धूली इत्यादि भी उदाहरण हैं।

वार्तिक - (*सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके*) शकटी, शकटिः।
क्तिन् प्रत्यय के अर्थ(भाव)से भिन्न अर्थ वाले सभी इकारान्त शब्दों से **ङीष्** प्रत्यय होता है ऐसा कुछ आचार्य कहते हैं, शकटि+ङीष् = शकटी , विकल्प से शकटिः।

१४. पुंयोगादाख्यायाम् ४.१.४८
या पुमाख्या पुंयोगात् स्त्रियां वर्तते ततो ङीष्, गोपस्य स्त्री गोपी,
जिस पुल्लिंग शब्द का पुरुष के योग से स्त्रीलिंग मे परिवर्त्तन करना है उस शब्द से **ङीष्** प्रत्यय होता है। गोप+ङीष् = गोपी ,
वार्तिक - (*पालकान्तान्न*) – यदि ऐसे शब्दों के अन्त में **पालक** हो तो ङीष् **नहीं** होता है। -

१५. प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः ७.३.४४
प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्याकारस्येकारः स्यादापि स आप्सुपः परो न चेत्, गोपालिका, अश्वपालिका, सर्विका, कारिका, अतः किम् ? नौका, प्रत्ययस्थात्किम् ? शक्नोतीति शका , असुपः किम् ? बहुपरिव्राजका नगरी,
प्रत्यय में स्थित **क्** से पूर्व आने वाले **अ** के स्थान पर **इ** हो जाता है पर में यदि आप् (टाप् , चाप् , डाप्) हो तो ,
गोपालक(गोपाल् अक) + टाप् (आ)> गोपालिक+आ = गोपालिका ,

इसी तरह अश्वपालिका सर्विका कारिका इत्यादि ,

वार्तिक - (*सूर्याद्देवतायां चाब्वाच्यः*) - सूर्यस्य स्त्री देवता सूर्या
सूर्य की देवता स्त्री यदि ऐसा अर्थ हो तो सूर्य शब्द से **"चाप्"** प्रत्यय होता है | सूर्य + चाप् (आ) = सूर्या , देवतायां किम् ?
वार्तिक- (*सूर्यागस्त्ययोश्छे च ङ्यां च*) - सूर्य और अगस्त्य शब्द के बाद यदि **छ** या **ङी** हो तो यलोप होता है।
यलोपः , सूरी – कुन्ती मानुषीयम् ,

सूर्य + ङीष् (ई)	पुंयोगादाख्यायाम् ,
सूर + ई	सूर्यागस्त्ययोश्छे च ङ्यां च ,
सूर् + ई	यचि भम् , यस्येति च ,

विशेष – सूर्यस्य देवता स्त्री **सूर्या** , सूर्यस्य मानुषी स्त्री **सूरी** ,

१६. इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलचार्याणामानुक् ४.१.४९
एषामानुगागमः स्यात् ङीष् च, इन्द्रस्य स्त्री - इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी,
इन्द्र आदि शब्दों से **ङीष्** प्रत्यय के साथ **आनुक्** आगम भी होता है।
इन्द्र +आनुक्(आन्)+ङीष्(ई)> इन्द्रान्+ई> इन्द्राण्+ ई > इन्द्राणी ,
इसी तरह वरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी ,

वार्तिक - (*हिमारण्ययोर्महत्त्वे*) –
हिम और अरण्य शब्द से महत्त्व अर्थ में **ङीष्** और **आनुक्** होता है।
महद् हिमं हिमानी , महत् अरण्यम् अरण्यानी ,

वार्तिक -(*यवाद्दोषे*) -
यव शब्द से **दोष** अर्थ में **ङीष्** और **आनुक्** होता है। दुष्टो यवो यवानी,

वार्तिक - (*यवनाल्लिप्याम्*)
यवन शब्द से लिपि अर्थ में **ङीष्** और **आनुक्** होता है।
यवनानां लिपिः यवनानी ,

वार्तिक - (*मातुलोपाध्याययोरानुग्वा*)
मातुल और उपाध्याय शब्द से **आनुक्** विकल्प से होता है।
मातुलानी, मातुली, उपाध्यायानी, उपाध्यायी,

वार्तिक - (*आचार्यादणत्वं च*)
आचार्य शब्द के बाद आनुक् के न् के स्थान पर ण् नहीं होता है।
आचार्यस्य स्त्री आचार्यानी,

वार्तिक - (*अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे*)
अर्य और क्षत्रिय शब्द से आनुक् और ङीष् स्वार्थ में विकल्प से होते हैं ,अर्याणी, अर्या, क्षत्रियाणी, क्षत्रिया॥

१७. क्रीतात्करणपूर्वात् ४.१.५०
क्रीतान्ताददन्तात् करणादेः स्त्रियां ङीष्स्यात्, वस्त्रक्रीती, क्वचिन्न, धनक्रीता॥
ऐसा अकारान्त शब्द जिसके अन्त में **क्रीत** हो और जिसमें करण वाचक शब्द पूर्व में हो उससे स्त्रीलिंग में ङीष् होता है। वस्त्रेण क्रीता वस्त्रक्रीती , इसी तरह वसनक्रीती , कहीं कहीं ङीष् नहीं होता है जैसे धनक्रीता ,

१८. स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात् ४.१.५४
असंयोगोपधमुपसर्जनं यत् स्वाङ्गं तदन्ताददन्तात् ङीष्वा स्यात्, केशानतिक्रान्ता - अतिकेशी, अतिकेशा, चन्द्रमुखी चन्द्रमुखा, असंयोगोपधात्किम् ? सुगुल्फा, उपसर्जनात्किम् ? शिखा॥
स्वाङ्ग वाची शब्द यदि उपसर्जन हो और उसकी उपधा में संयोग न हो तो ऐसे शब्दों से स्त्रीत्वविवक्षा में विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।

१९. न क्रोडादिबह्वचः ४.१.५६
क्रोडादेर्बह्वचश्च स्वाङ्गान्न ङीष्, कल्याणक्रोडा, आकृतिगणो ऽयम्, सुजघना॥
क्रोड आदि शब्द जिसके अन्त में हों तथा जो बहुत स्वर वर्णों वाला शब्द हो उससे स्त्रीत्व विवक्षा में ङीष् प्रत्यय **नही** होता है।

२०. नखमुखात्संज्ञायाम् ४.१.५८
न ङीष् ,
नख और मुख शब्द यदि अन्त में आते हों और वह शब्द किसी की संज्ञा (नाम) बनता है तो ऐसे शब्दों से भी ङीष् **नही** होता है। -

२१. पूर्वपदात्संज्ञायामगः ८.४.३
पूर्वपदस्थान्निमित्तात्परस्य नस्य णः स्यात् संज्ञायां न तु गकारव्यवधाने, शूर्पणखा, गौरमुखा, संज्ञायां किम् ? ताम्रमुखी कन्या॥
पूर्वपद में यदि णत्व का कोई निमित्त (र् या ष्) हों , गकार का व्यवधान न हो तथा शब्द संज्ञा वाचक बनता हो तो न् के स्थान पर ण् होता है।
शूर्पनख +टाप् (आ) > शूर्पणखा , गौरमुख +टाप् = गौरमुखा , संज्ञा वाचक न हो तो ङीष् का निषेध नहीं होता और ताम्रमुखी इत्यादि रूप बनता है।

२२. जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् ४.१.६३
जातिवाचि यन्न च स्त्रियां नियतमयोपधं ततः स्त्रियां ङीष् स्यात्, तटी, वृषली, कठी, बह्वृची, जातेः किम् ? मुण्डा, अस्त्रीविषयात्किम् ? बलाका, अयोपधात्किम् ? क्षत्रिया,
जातिवाचक जो शब्द केवल स्त्रीलिंग में ही नियत नही है तथा अयोपध (जिसकी उपधा में य् नहीं है) हो , ऐसे शब्दों से स्त्रीत्व विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है।

वार्त्तिक - (*योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः*)
योपध शब्दों से ङीष् का जो निषेध हुआ है उसमें हय, गवय , मुकय, मनुष्य और मत्स्य शब्दों का निषेध नही होगा , अर्थात् ङीष् होगा ,
हयी, गवयी, मुकयी, हलस्तद्धितस्येति यलोपः, मनुषी,

वार्त्तिक - (*मत्स्यस्य ङ्याम्*) , यलोपः,

मत्स्य शब्द के बाद यदि ङी हो तो य् का लोप होता है।
मत्स्य + ङीष् (ई)> मत्स + ई = मत्सी ,

२३. **इतो मनुष्यजातेः ४.१.६५**
ङीष्, दाक्षी , अवन्ती , कुन्ती ,
इकारान्त मनुष्यजाति वाचक शब्द से स्त्रीलिंग में ङीष् प्रत्यय होता है।
दाक्षि (दक्ष+इञ्)+ ङीष् = दाक्षी इत्यादि , दक्ष के कुल में उत्पन्न कन्या ,

२४. **ऊङुतः ४.१.६६॥**
उदन्तादयोपधान्मनुष्यजातिवाचिनः स्त्रियामूङ् स्यात्, कुरूः, अयोपधात्किम् ? अध्वर्युर्ब्राह्मणी॥
ह्रस्व उकारान्त शब्द जो मनुष्यजातिवाचक हों तथा जिनकी उपधा में "य्" न हो ऐसे शब्दों से स्त्रीत्वविवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है।
कुरु + ऊङ् = कुरूः , ब्रह्मबन्धु+ऊङ् = ब्रह्मबन्धूः , इत्यादि ,
२५. **पङ्गोश्च ४.१.६८॥**
पङ्गूः,
पङ्गु शब्द से भी स्त्रीत्वविवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है।
पङ्गु + ऊङ् = पङ्गूः ,

वार्तिकअ - (श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च) श्वश्रूः ॥
श्वशुर शब्द से ऊङ् प्रत्यय होता है और श्वशुर शब्द के उकार का लोप भी होता है।
श्वशुर+ऊङ्(ऊ)> श्वश् र् +ऊ = श्वश्रू> श्वश्रूः ,

२७. **ऊरूत्तरपदादौपम्ये ४.१.६९॥**
उपमानवाची पूर्वपदमूरूत्तरपदं यत्प्रातिपदिकं तस्मादूङ् स्यात्, करभोरूः॥
जिसका पूर्व पद उपमान वाची हो तथा उत्तरपद ऊरु हो ऐसे शब्दों से भी स्त्रीत्व विवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है।
करभोरु+ऊङ् = करभोरूः ,

२८. **संहितशफलक्षणवामादेश्च ४.१.७०॥**
अनौपम्यार्थं सूत्रम्, संहितोरूः, शफोरूः, लक्षणोरूः, वामोरूः॥
जिसके आदि में संहित, शफ, लक्षण अथवा वाम हो तथा उत्तरपद ऊरु हो ऐसे शब्दों से भी स्त्रीलिंग में ऊङ् प्रत्यय होता है।
संहितोरु+ऊङ् = संहितोरूः इत्यादि ,

२९. **शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् ४,१.७३**
शार्ङ्गरवादेरञो योऽकारस्तदन्ताच्च जातिवाचिनो ङीन् स्यात् , शार्ङ्गरवी, बैदी, ब्राह्मणी,
शार्ङ्गरव आदि तथा अञ् प्रत्ययान्त जो अकारान्त शब्द हैं उनसे स्त्रीत्व विवक्षा में **ङीन्** प्रत्यय होता है।
शार्ङ्गरव + ङीन् = शार्ङ्गरवी , बिद+अञ्=बैद+ङीन् = बैदी , इत्यादि ,

वार्तिक - (*नृनरयोर्वृद्धिश्च*)/ नारी ,
नृ तथा नर शब्द से भी ङीन् प्रत्यय होता है और दोनों शब्दों में स्थित स्वरों की वृद्धि भी होती है।
नृ+ङीन्(ई) > नार्+ई = नारी , नर+ङीन्(ई)>नार+ई>नार्+ई = नारी ,

३०. यूनस्तिः ४.१.७७

युवञ्छब्दात् स्त्रियां तिः प्रत्ययः स्यात्, युवतिः॥

युवन् शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में “ति” प्रत्यय होता है। युवन् + ति >युवति> युवतिः।

॥ प्रत्ययानुसार सूची ॥

१- टाप् -

अजाद्यतष्टाप्	अजा, एडका, अश्वा, चटका, मूषिका, बाला, वत्सा, होडा, मन्दा, विलाता।

२- चाप् -

वा. सूर्याद्देवतायां चाब्वाच्यः	सूर्या

३- ति -

यूनस्तिः	युवतिः

४- ङीन् –

शार्ङ्रवाद्यञो ङीन्	शार्ङ्रवी, कापटवी,बैदी,ब्राह्मणी
वा. नृनरयोः वृद्धिश्च	नारी

५ - ङीप् –

उगितश्च	भवती, पचन्ती, यजन्ती, दीव्यन्ती
टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मा-त्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः	कुरुचरी,सौपर्णेयी,कुम्भकारी,चौरी,औत्सी,ऊरुद्वयसी,उरुदघ्नी,उरुमात्री, पञ्चतयी,आक्षिकी, लावणिकी,यादृशी,इत्वरी
वयसि प्रथमे	कुमारी, किशोरी
द्विगोः	त्रिलोकी,पञ्चपूली,दशपूली
वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः	एता,एनी,श्येता,श्येनी,हरिता, हरिणी
यञश्च	गार्गी,वात्सी

६-ऊङ्

ऊङुतः	कुरूः,ब्रह्मबन्धूः,वीरबन्धूः,अलाबूः,कर्कन्धूः
पङ्गोश्च	पङ्गूः
ऊरूत्तरपदादौपम्ये	तम्भोरूः,नागनासोरूः,करभोरूः
संहितशफलक्षणवामादेश्च	संहितोरूः,शफोरूः,लक्षणोरूः,वामोरूः
वा.श्वसुरस्योकाराकार-लोपश्च	श्वश्रूः
सहितसहाभ्याञ्चेति	सहितोरूः,सहोरूः

७- ङीष्

प्राचां ष्फ तद्धितः	गार्ग्यायणी,वात्स्यायनी
षिद्गौरादिभ्यश्च	गौरी,मत्सी,नर्त्तकी,खनकी,रजकी

वोतो गुणवचनात्	पट्वी,पटुः,मृद्वी,मृदुः
बह्वादिभ्यश्च	बह्वी,बहुः
पुंयोगादाख्यायाम्	गणकी, गोपी, महामात्री,प्रष्ठी,प्रचरी
इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृड-हिमारण्ययवयवनमातुला-चार्याणामानुक्	इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी, हिमानी, अरण्यानी, यवानी, यवनानी, मातुलानी, आचार्यानी,
क्रीतात्करणपूर्वात्	वस्त्रक्रीती, वसनक्रीती
स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयो-गोपधात्	चन्द्रमुखी,चन्द्रमुखा,अतिकेशी,अतिकेशा
जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् (वा.योपधप्रतिषेधे हयगवय-मुकयमनुष्यमत्स्याना-मप्रतिषेधः)	कुक्कुटी, सूकरी, ब्राह्मणी, वृषली, नाडायनी, कठी, तटी, हयी, गवयी, मुकयी, मनुषी, मत्सी
इतो मनुष्यजातेः	अवन्ती,कुन्ती,दीक्षी,प्लाक्षी,दाक्षी
वा . कृदिकारादक्तिनः	रात्री,रात्रिः
वा.सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके	शकटी,शकटिः

अरुणा: पाण्डेय: